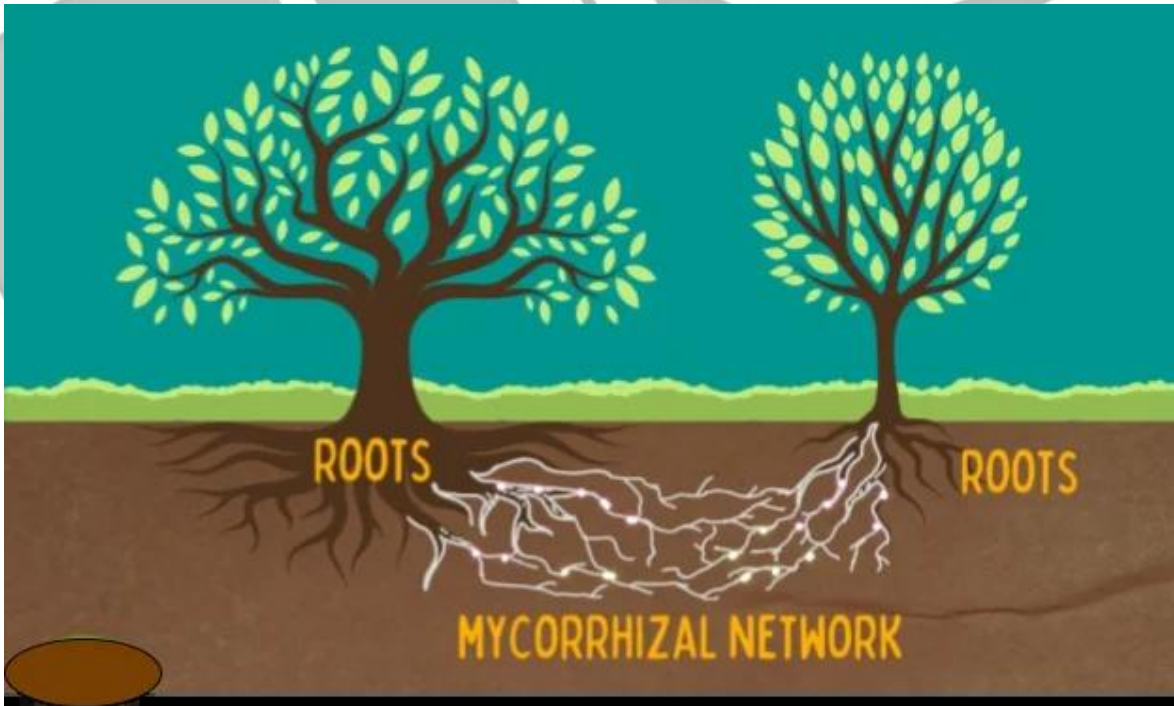


माइकोराइज़ल कवक संरक्षण

स्रोत: डाउन टू अर्थ

सोसाइटी फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ अंडरग्राउंड नेटवर्क्स (SPUN) ने अंडरग्राउंड एटलस लॉन्च किया है, जो दर्शाता है कि **माइकोराइज़ल कवक** के 90% से अधिक हॉटस्पॉट **संरक्षित क्षेत्रों** के बाहर हैं। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि माइकोराइज़ल कवक पोषक तत्वों के चक्रण और **कार्बन पृथक्करण** में एक अहम भूमिका निभाते हैं।

- पारस्थितिकी तंत्र में भूमिका: माइकोराइज़ल कवक 80% से अधिक पौधों के साथ सहजीवी संबंध बनाते हैं, फास्फोरस जैसे पोषक तत्वों के अवशोषण में सहायता करते हैं और पौधों की जड़ों से CO₂ का उपयोग करके कार्बन पृथक्करण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
 - वे प्रतिवर्ष लगभग 13 बिलियन टन CO₂ या वैश्विक जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन का एक तिहाई संग्रहीत करते हैं।
- माइकोराइज़ल कवक के प्रकार:
 - **AM (आर्बुस्कुलर माइकोराइज़ल) कवक**: ये कवक पौधों की जड़ की कोशिकाओं में प्रवेश करते हैं और मुख्य रूप से फसलों और घास के पौधों में पाए जाते हैं।
 - **हॉटस्पॉट**: ब्राजीलियाई सेराडो, दक्षिण पूर्व एशिया, पश्चिम अफ्रीका
 - **EcM (एक्टोमाइकोराइज़ा) कवक**: ये कवक पौधों की जड़ों के चारों ओर लपेटे रहते हैं और मुख्य रूप से वृक्षों जैसे ओक (Oak) और पाइन (Pine) में पाए जाते हैं।
 - **हॉटस्पॉट**: कनाडा, साइबेरिया, मध्य यूरोप, पश्चिम अमेरिका।
- कवक और अन्य मृदा जीवों के पारस्थितिकी महत्व को पहचानते हुए, FAO ने कनाडा में **जैव विविधता पर कन्वेंशन (CBD)** के COP15 बैठक में वैश्विक मृदा जैव विविधता वैधशाला (GLOBSOB) लॉन्च की, जो मृदा जीवन की नगरानी, सुरक्षा और पर्यावरण नीति में एकीकरण के लिए एक वैश्विक प्रयास है।



और पढ़ें: [फ्लोरा फौना और 'फंगा'](#)

